अध्याय–प्रथम

शोध परिचय

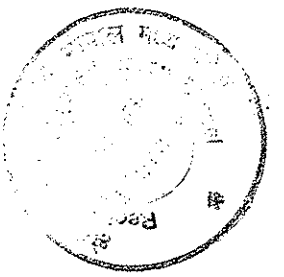

1.1 प्रस्तावना

- 1.1.1 भूगोल का शाब्दिक अर्थ
- 1.1.2 भूगोल की शाखाएँ
- 1.1.3 भूगोल शिक्षण का स्वरूप
- 1.1.4 भूगोल शिक्षण के उद्देश्य
- 1.1.5 राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 में भूगोल का स्थान
- 1.1.6 मनो–संदर्भिय चर तथा व्यवहारिक ज्ञान
- 1.1.7 भूगोल शिक्षण की विधियाँ
- 1.1.8 भूगोल की शिक्षण सहायक सामग्री

1.2 अध्ययन की आवश्यकता

1.3 समस्या का कथन

1.4 शोध के उद्देश्य

1.5 अध्ययन की परिकल्पना

1.6 चरों की परिभाषा

1.7 अध्ययन का सीमांकन

अध्याय – प्रथम

शोध परिचय

1.1 प्रस्तावना

भूगोल विज्ञान की जननी है। विज्ञान की उत्पत्ति भूगोल से ही हुई है। भूगोल सामाजिक विज्ञान की एक महत्वपूर्ण शाख़ा है। जिसमें पर्यावरण से संबंधित मानव क्रिया–कलापों का अध्ययन किया जाता है। मानव के आसपास जो प्राकृतिक वातावरण है, उसमें मानव किस प्रकार क्रियाकलाप, समायोजन करता है। इसका अध्ययन भूगोल में किया जाता है। भूगोल और मानव का संबंध बहुत ही पास का है। भूगोल विषय में पृथ्वी की सतह, जलवायु, खनिज संपदा, मिट्टी, वन, मरूस्थल, सौरमंडल, पशु जीवन, सूर्य, ग्रह, सौरमंडल, भूगर्भशास्त्र, प्राकृतिक एवं नैसर्गिक आपदाऐं इत्यादि विषयों का अध्ययन किया जाता है।

भूगोल सामाजिक विज्ञान की एक शाखा है। मानव जीवन का वर्णन तथा उसका पर्यावरण के साथ समायोजन का अध्ययन इसमें किया जाता है। आज भूगोल के अध्ययन को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ है। भूगोल का व्यावहारिक ज्ञान होना भूगोल का महत्वपूर्ण अंग है। केवल किताबें पढ़कर यह ज्ञान हमें प्राप्त नहीं हो सकता। जब तक हम प्रकृति से संबंध स्थापित नहीं करेंगे तब तक हमें भूगोल का पूरा ज्ञान नहीं होगा। प्रतियोगिता के युग में केवल पुस्तकीय ज्ञान को हम ज्ञान नहीं कह सकते। ज्ञान तो वह होता है, जो हम पढ़ने के बाद उसका प्रयोग कहाँ और कैसे करें। प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा यह जानने का प्रयास किया जा रहा है कि भूगोल विषय के बारे में कितना व्यावहारिक ज्ञान है, हम भूगोल विषय को कितना जानते हैं। इसके लिये सर्वप्रथम यह जानना आवश्यक है कि भूगोल का शाब्दिक अर्थ क्या है?

1.1.1 भूगोल का शाब्दिक अर्थ

भूगोल अर्थात् 'पृथ्वी का वर्णन' ऐसी सामान्यतः व्याख्या कि जाती है। भूगोल को अंग्रेजी में Geography कहते हैं। जहाँ Geo + graphy यह दो शब्द है।

जिसमें Geo = पृथ्वी, धरा

Graphy = वर्णन करना।

उपरोक्त वर्णन से पता चलता है कि पृथ्वी का वर्णन जहाँ होता है, उस शाखा को भूगोल कहते हैं परंतु भूगोल विषय में केवल पृथ्वी का वर्णन नहीं करते तो भूगोल में पृथ्वी के वर्णन के साथ-साथ मानव का पर्यावरण के साथ समायोजन का अध्ययन किया जाता है।

आधुनिक भूगोल में मानव की आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक और भौतिक समस्याओं का अध्ययन किया जाता है। साथ ही यह भी अध्ययन करता है कि प्रकृति एवं मानव एक दूसरे के कितने समीप है। भूगोल विषय के संबंध में विभिन्न व्यक्तियों ने विभिन्न परिभाषायें दी है जो निम्नलिखित है-

शब्दकोष

"भूगोल पृथ्वी तल और पृथ्वी पर रहने वाले निवासियों का विज्ञान है।"

हार्टशोर्न (1989)

"भूगोल पृथ्वी को मनुष्य की दुनिया की तरह मानकर पृथ्वी का वैज्ञानिक विवरण देने का प्रयास करता है।"

ग्रिटीथ टेलर

"भूगोल का कार्य पृथ्वी के भावी नागरिकों को इस प्रकार प्रशिक्षित करना है कि वे विश्व के विज्ञान रंगमंच की परिस्थितियों की ठीक-ठीक

कल्पना कर सके और पर्यावरण की समस्याओं पर बुद्धिमत्तापूर्वक चिंतन करने में उन्हें सहायता प्राप्त हो सके।''

इस प्रकार उपरोक्त भूगोल की परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि भूगोल में केवल प्राकृतिक वातावरण का ही अध्ययन नहीं किया जाता अपितु मानवी क्रियाओं का भी इसमें अध्ययन किया जाता है। जिससे विद्यार्थियों को पर्यावरणीय संकल्पनाओं का ज्ञान होता है। भूगोल का संबंध मानव, पर्यावरण, प्रकृति, सौरमंडल इत्यादि से है। यह एक ऐसा सामाजिक विज्ञान है, जिसमें मानवी क्रिया-कलापों का अध्ययन किया जाता है। भूगोल की प्रमुख दो शाखाऐं हैं।

1.1.2 भूगोल की शाखाएँ

1. प्राकृतिक/भौतिक भूगोल
2. मानव भूगोल

1. प्राकृतिक भूगोल

17 वीं एवं 19 वीं शताब्दी के बीच जर्मन दार्शनिक कॉल एवं स्वीडन निवासी वर्गमैन ने पृथ्वी का सरल व सुबोध वर्णन किया। इन भूगोलविद्त्ताओं ने बताया कि पृथ्वी पर होने वाली प्राकृतिक क्रियाओं जैसे वर्षा, ज्वालामुखी, भूकंप, गर्मी, ठंडी आदि के पीछे कुछ भौगोलिक कारण छिपे हैं। जेम्स, कुक, हम्बोल्ट, वारेनियस, कोलम्बस, वास्को-डि-गामा तथा मेगेलन इन्होंने वैज्ञानिक शोध से प्राकृतिक भूगोल के ज्ञान में वृद्धि की। इस बढ़े हुये ज्ञान से दूसरे विज्ञान का जन्म हुआ जैसे :- भौतिकशास्त्र, रसायनशास्त्र, ज्योतिषशास्त्र तथा भूगोल आदि का जन्म हुआ। इस नवीन विज्ञान में से प्राकृतिक भूगोल की एक शाखा उभर कर आयी।

पृथ्वी पर पाये जाने वाली आकृतियों का क्रमबद्ध अध्ययन तथा उनका आपस में संबंध ही प्राकृतिक भूगोल कहलाता है। वर्तमान समय

में भूगोल के अध्ययन में स्थलमंडल, जलमंडल, वायुमंडल तथा जीवमंडल का क्रमबद्ध अध्ययन किया जाता है।

प्राकृतिक भूगोल की प्रमुख शाखाऐं

1. भू–आकृति विज्ञान
2. सागर विज्ञान
3. जलवायु विज्ञान
4. वनस्पति भूगोल
5. प्राणी भूगोल
6. खगोलशास्त्र
7. ज्योर्तिविज्ञान
8. भू–विज्ञान

2. मानव भूगोल

भूगोल की इस शाखा में मानवीय जीवन के क्रियाओं का अन्तरसंबंध का अध्ययन किया जाता है। मानव का सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक तथा अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का अध्ययन किया जाता है।

मानव भूगोल की परिभाषा

मानव भूगोल में मानवीय क्रियाकलापों का अध्ययन किया जाता है। इन क्रियाकलापों का विस्तृत वर्णन इसमें किया जाता है। मानव भूगोल की परिभाषा निम्नलिखित है।

1. लाब्लाश (1991): मानव भूगोल विकसित विचारों की अभिव्यंजना है जो खोज और भौगोलिक ज्ञान के फलस्वरूप अभिव्यक्त हुई है।
2. सेम्पुल (1911) मानव भूगोल क्रियाशील मानव और अस्थायी पृथ्वी के परिवर्तनशील संबंध का अध्ययन है।

3. हटिंग्टन (1920): मानव भूगोल भौगोलिक वातावरण और मानव कार्यकलाप एवं गुणों के संबंध का स्वरूप और विवरण का अध्ययन है।

मानव भूगोल की शाखाऐं

1. सामाजिक भूगोल
2. आर्थिक भूगोल
3. सांस्कृतिक भूगोल
4. पर्यटन भूगोल
5. राजकीय भूगोल
6. कृषि भूगोल
7. चिकित्सा भूगोल
8. ऐतिहासिक भूगोल

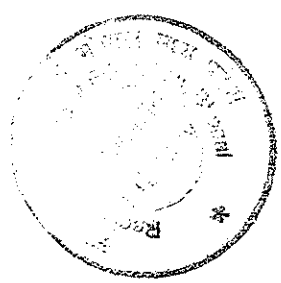

1.1.3 भूगोल शिक्षण का स्वरूप

ऐतिहासिक घटनाओं से लेकर किसी क्षेत्र का धरातलीय स्वरूप (भौतिक तथा मानवनिर्मित) आधारित, उद्योग, यातायात, संचार साधन, रीति-रिवाज, आचार-विचार, व्यवहार तथा परंपरा आदि समस्त सामाजिक क्रिया-कलापों को ठीक ढंग से समझने के लिये भौगोलिक तथ्यों के ज्ञान की आवश्यकता होती है। इसके अलावा पृथ्वी की स्थलाकृति, वायुमंडलीय परिघटना आदि में तथ्यों की ज्ञान होता है इतना ही नहीं भूगोल विषय के अध्ययन से मानसिक विकास होता है। वह विद्यार्थी जिन्हें भूगोल का ज्ञान होता है, वह अपने को विश्व का नागरिक मानने से इन्कार नहीं कर पाता। अतः प्राथमिक स्तर पर जो ज्ञान उनको दिया जाता है वहीं उनके भविष्य के ज्ञान की नींव होती है। अतः यह सबसे बड़ी जिम्मेदारी शिक्षकों की है कि वे किस प्रकार से विद्यार्थियों को विषय का ज्ञान देते

हैं, परंतु वर्तमान में जिस तरीके से विद्यार्थीयों को पढ़ाया जाता है वह अरूचिकर साबित होता है, विद्यार्थी भी केवल परीक्षा पास करने की दृष्टि से भूगोल का अध्ययन करते हैं और फिर समयांतर में सब कुछ भूल जाते हैं। अतः शिक्षकों का दायित्व है कि वे भूगोल विषय को इस तरीके से पढ़ायें कि विद्यार्थी अपने भूगोल के ज्ञान को अधिकाधिक मजबूत कर सकें। अगर भूगोल विषय पाठ्यपुस्तक विधि से रटवा दिया गया तो निश्चित है कि केवल उस कक्षा की परीक्षा तक तो उन्हें याद रहेगा, लेकिन बाद में उसे भूल जायेंगे तथा यह ज्ञान उनके किसी भी काम नहीं आयेगा। मगर आज भूगोल अध्यापन करते वक्त अधिकतर अध्यापक इसी तरीके से अध्यापन करते हैं। ब्लूम के अनुसार ज्ञानात्मक, भावात्मक, मनोगत्यात्मक तीनों के प्रकार के शैक्षिक उद्देश्यों के ध्यान में रखकर शिक्षण होना चाहिये। ज्ञानात्मक स्तर के शिक्षण ज्ञान से शुरू होकर बोध, प्रयोग, विश्लेषण, संश्लेषण, मूल्यांकन तक होना चाहिये। किसी विषय के शिक्षण के पश्चात् विद्यार्थी उस विषय को समझकर उसे अपने दैनिक जीवन में प्रयोग कर सके। उन्हें उन संकल्पनाओं का व्यवहारिक ज्ञान हो सके। इस तरीके से अध्यापन होना चाहिये। ताकि विद्यार्थी उस ज्ञान को दीर्घकाल तक याद रखे।

1.1.4 भूगोल शिक्षण के उद्देश्य

भूगोल की शिक्षा मनुष्य के लिये उपयुक्त है। इस शिक्षा के निम्नांकित उद्देश्य है :-

- ❖ भूगोल द्वारा स्थलसंबंधी ज्ञान प्रदान करना।
- ❖ भूगोल द्वारा व्यवसायी कृषि तथा उद्योगधंधों का ज्ञान प्रदान करना।
- ❖ जीवन के लिये विभिन्न प्रदेशों को भौगोलिक परिस्थिति की जानकारी में सहायता देना।

- ❖ समाचार पत्रों में आने वाले संदर्भो का स्पष्टीकरण करना।
- ❖ पर्यटन की इच्छा को जागृत करना।
- ❖ स्वदेश प्रेम की उत्पत्ति करना।
- ❖ प्राकृतिक सौंदर्य का सच्चा ज्ञान देना।
- ❖ मानव और पृथ्वी संबंधी दृष्टि से संसार का मूल्यांकन करना।
- ❖ भौगोलिक परिस्थिति को समझना।
- ❖ विश्व परिवार की भावना का विकास करना।
- ❖ भूत और भविष्य की परिस्थितियों से परिचित होने का कौशल निर्माण करना।
- ❖ भौगोलिक पर्यावरण के प्रति उत्तरदायित्व की भावना का विकास करना।

1.1.5 राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 में सामाजिक विज्ञान का स्थान

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या में कहा गया है कि, सामाजिक विज्ञान को हमेशा विज्ञान से कम दर्जा दिया जाता है। अतः विद्यार्थियों में सामाजिक विज्ञान विषयी रूचि दब जाती है। ऐसी भी मान्यता है कि, सामाजिक विज्ञान मे विशेषता हासिल करने वालों को नौकरी के अधिक अवसर नहीं मिलते। परन्तु यह पूर्णतः असत्य है, तेजी से बढ़ते सेवाक्षेत्र में सामाजिक विज्ञान की प्रासंगिकता बढ़ती जा रही है। यह पहचानने की आवश्यकता है, कि सामाजिक विज्ञानों में भी प्राकृतिक विज्ञानों एवं शारीरिक विज्ञानों की तरह वैज्ञानिक दृष्टि होती है।

सामाजिक विज्ञान का भूगोल एक महत्वपूर्ण विषय है। प्रश्न यह उठता है, कि बच्चों को कैसे पढ़ाया जायें? भूगोल शिक्षा का उद्देश्य क्या होना चाहिये और समाज के लिये यह कैसे उपयोगी

होगा। भूगोल में जिन अवधारणाओं का अध्ययन किया जाता है, उन अवधारणाओं का व्यावहारिक महत्व भी होता है। पर्यावरण संवर्धन वैश्विक जागरूकता, व्यवसाय सम्बन्धी जानकारी, भूमण्डलीकरण इत्यादि विषयों पर भौगोलिक अध्ययन किया जाता है। इनका ज्ञान होना आज आवश्यक हुआ है। इसलिये भूगोल पढ़ाते समय अवधारणाओं का सम्बन्ध मानवी जीवन से जोड़कर अध्यापन करना चाहिये, ताकि बच्चों में उत्साह बना रहे और उनको व्यवहारिक ज्ञान भी मिल जाए।

कक्षाओं में अक्सर परंपरागत विधियों से अध्यापन कार्य चलता है। इससे विद्यार्थी केवल परीक्षार्थी बनता जा रहा है। उसमें ज्ञान एवं समझ का विकास नहीं होता। मानव गतिविधियों और व्यवहार का विस्तृत क्षेत्र सामाजिक जीवन एवं संस्कृति को जीवित रखता है। कृषि व्यवसाय, दुकानदारी जैसे पेशों के साथ-साथ विविध प्रकार के प्रदर्शन और दृश्यकलाएँ तथा खेलकूद सभी ज्ञान के मूल्यवान रूप है। यह सभी ज्ञान व्यावहारिक प्रकृति के होते है। जिनकी पूरी अभिव्यक्ति आज की शिक्षा में नहीं हो पाती।

भूगोल मे मानविकी की अपनी अवधारणाएँ होती है, उदाहरण के लिये समुदाय, आधुनिकता, संस्कृति, अस्मिता और राजनीति। इन अवधारणाओं का लक्ष्य होता है, मनुष्यों और समाज में मौजूद समूहों की एक सामान्य और समीक्षात्मक समझ विकसित करता है। मानव भूगोल मानव व्यवहारों का अध्ययन करता है, जिसका आधार तर्क होता है, इस प्रकार विद्यार्थियों में व्यावहारिक ज्ञान का विकास होता है।

मानव सभ्यता एवं ज्ञान का संचयन, ज्ञान अर्जन एवं चीजों को करने के तरीके मानव समाज की वंशानुगत धरोहर के मूल्यवान हिस्से है। इसलिये हमारे बच्चों में इस ज्ञान तक पहुँचने का अधिकार है, ताकि वे जिससे अपनी सामान्य बुद्धी को शिक्षित एवं समृद्ध बना पायें। जिससे इनका खुद का विकास हो, वे स्वयं को खोज पाएँ और इन औजारों एवं दृष्टिकोण के जरिए संसार, प्रकृति एवं लोगों के विषय में भी जान पाएँ।

अतः भौगोलिक अवधारणाओं के व्यावहारिक ज्ञान की समझ विद्यार्थियों में होनी चाहिये। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या का उद्देश्य है कि, विद्यार्थियों में ज्ञान एवं समझ का विकास हो। पाठ्यचर्या का नियोजन इस तरह हो कि, बालकों का सर्वांगीण विकास होना चाहिये। बच्चे जब स्कूल में आते है, तो अपने आसपास की दुनिया के अनुभव लेकर आते है, वे पेड़ जिन पर वे चढ़े फल जो उन्होंने खाये, चिड़ियाँ जिन्हें उन्होंने पसंद किया। हर बच्चा बहुत ही सक्रिय होकर दिन और रात के चक्र को देखता है, मौसम, पानी, अपने आसपास के जानवरों और पौधों को भी देखता है। इन परिस्थिति में अध्यापक अगर वातावरण का पाठ शुरू करने से पहले मैदान में सैर कराने ले जाये तो वे बेहतर ढंग से वातावरण को समझ पायें। जलप्रदुषण के पाठ के समय बच्चों को जलस्त्रोतों और जलाशयों का परीक्षण करें तो उन्हें प्रदुषण की संकल्पना समझ आयेंगी और वह बच्चों को ज्ञात होगा कि, व्यावहारिक दृष्टि से यह सब नहीं करना चाहिये। चंद्रमा और उसके चक्रों का अध्ययन करते हुये अगर अध्यापक ने रात में चाँद का अवलोकन करने बताया गया तो बच्चों की समझ बढ़ती जाएगी।

इस प्रकार के अध्यापन शिक्षण से हम बच्चों में भौगोलिक व्यावहारिक ज्ञान को बढ़ावा दे सकते है। और इस तरह से राष्ट्रीय पाठ्यचर्या का उद्देश्य जो बालकों में व्यावहारिक दृष्टीकोन को बढ़ावा देना चाहिए यह सफल हो जायेगा।

1.1.6 मनो–संदर्भिय चर तथा व्यवहारिक ज्ञान

किसी भी विषय के व्यावहारिक ज्ञान का सम्बन्ध मनो–संदर्भित चरों से होता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में मनो–संदर्भिय चरों से भौगोलिक व्यावहारिक ज्ञान के सम्बन्ध का अध्ययन किया जा रहा है। अतः इन दोनों के सम्बन्ध के बारे में जानना जरूरी है। मनो–संदर्भिय चरों में सबसे पहले हम बुद्धी की बात करेंगे। बुद्धी एक शील गुण है जो जन्मजात होता है। वातावरण का प्रभाव भी बुद्धी पर होता है। वातावरण अनुकूल हो, तो बुद्धी का विकास अधिक होता है। बुद्धी एक ऐसा तत्व है, जो देखा नहीं जा सकता है, बल्कि व्यक्ति के द्वारा किये जाने वाले व्यवहारों के आधार पर ही जाना जा सकता है। बुद्धी की क्रियायें में प्रमुख है, निर्णय करना, ठीक से समझना और ठीक से तर्क करना, इन्हीं क्रियाओं के द्वारा बुद्धी व्यक्त होती है। किसी भी विषयों का अध्ययन करते समय बुद्धी से सम्बन्ध स्थापित होता है। बुद्धी का विकास अधिक है, तो विद्यार्थियों में व्यावहारिक ज्ञान भी होगा। इसीलिये प्रस्तुत अध्ययन में बुद्धी का सम्बन्ध व्यावहारिक ज्ञान से देखा जा रहा है।

शैक्षिक उपलब्धि में विद्यार्थियों का संख्यात्मक परीक्षण किया जाता है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली केवल संख्यात्मक मूल्यांकन करती है। परन्तु विद्यार्थियों का गुणात्मक विकास के लिये प्रत्येक विषयों का मूल्यांकन व्यावहारिक दृष्टिकोण से भी होना चाहिए। विद्यार्थियों का ज्ञानात्मक, भावात्मक मनो–गत्यात्मक तीनों प्रकार के शैक्षिक उद्देश्यों को ध्यान में

रखकर शिक्षण होना चाहिए। कई बार विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अच्छी होती है, परन्तु उन्हें व्यावहारिक ज्ञान नहीं होता। इसीलिये प्रस्तुत अध्ययन में शैक्षिक उपलब्धि एवं भौगोलिक व्यावहारिक ज्ञान का अध्ययन किया जा रहा है।

मनो–संदर्भित चरों में सामाजिक, आर्थिक स्तर का अध्ययन किया जा रहा है। विद्यार्थियों के भौगोलिक व्यावहारिक ज्ञान पर सामाजिक–आर्थिक स्तर क्या प्रभाव होता है? यह प्रस्तुत अध्ययन के द्वारा जानने की कोशिश की जा रही है। विभिन्न सामाजिक आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों में भौगोलिक व्यावहारिक ज्ञान का स्तर किस प्रकार है। कभी–कभी उच्च सामाजिक स्तरों को जो ज्ञान नहीं होता वह ज्ञान निम्न–स्तरीय विद्यार्थियों को होता है।

प्रस्तुत अध्ययन में ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के भौगोलिक व्यावहारिक ज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन किया जा रहा है। इसमें शासकीय तथा अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों भौगोलिक व्यावहारिक ज्ञान तथा छात्र एवं छात्राओं को भौगोलिक व्यावहारिक ज्ञान तथा छात्र एवं छात्राओं को भौगोलिक व्यावहारिक ज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन किया जा रहा है।

इस प्रकार उपरोक्त सभी मनो–संदर्भिय चरों का भौगोलिक व्यावहारिक ज्ञान से सम्बन्ध का अध्ययन प्रस्तुत में किया जा रहा है।

1.1.7 भूगोल शिक्षण की विधियाँ

भूगोल का पाठ्यक्रम विभिन्न विषयों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। भूगोल प्राकृतिक विज्ञान और मानवशास्त्र दोनों के बीच की कड़ी है। किसी भी विषय को पढ़ाने के उद्देश्य से उस विषय की शिक्षण विधियां निर्धारित होती है।

भूगोल के अर्थ, ज्ञान एवं उसकी विषय-वस्तु के विकास के साथ-साथ भूगोल की शिक्षण विधियां भी बदलती गई। विद्यालय के पाठ्यक्रम भूगोल के अतिरिक्त संभवतः दूसरा कोई ऐसा विषय नहीं है, जो इतनी विभिन्न पद्धतियों से पढ़ाया जाता है। भूगोल शिक्षक को केवल पाठ्यसामग्री का ही समुचित ज्ञान नहीं, भूगोल शिक्षा को हर स्तर पर किस विधि से पढ़ाना है इसका ज्ञान होना नितांत आवश्यक है। इन शिक्षण विधियों को निश्चित करने में बालकों की आयु, पाठ्यवस्तु की प्रकृति उनकी रूचि एवं उनकी योग्यता का ध्यान रखना अति आवश्यक है।

भूगोल की शिक्षण विधि एक मिश्रित विधि है।

भूगोल की कुछ प्रमुख विधियां इस प्रकार से है

1. निरीक्षण/प्रेक्षण विधि
2. वर्णनात्मक विधि
3. भ्रमनात्मक विधि
4. प्रादेशिक विधि
5. तुलनात्मक विधि
6. आगमन विधि
7. निगमन विधि
8. विचार-विमर्श विधि
9. पाठ्यपुस्तक विधि
10. योजना विधि
11. समस्या विधि
12. प्रयोगशाला/वैज्ञानिक विधि

1. निरीक्षण विधि

किसी वस्तु को देखकर उसकी विशेषताओं का सही ज्ञान प्राप्त किया जाये उसे निरीक्षण कहते हैं।

भूगोल शिक्षण की यह विधि सभी स्तर पर उपयुक्त है परंतु प्राथमिक स्तर पर यह विधि अधिक उपयुक्त है। प्राथमिक स्तर का विद्यार्थी शहरी, ग्रामीण वातावरण के संपर्क में आता है और इस प्रकार वातावरण के निरीक्षण के माध्यम से भौगोलिक तथ्यों सामान्य प्रत्ययों और सरल सिद्धांतों को जानकारी प्राप्त करना है। इस विधी का प्रयोग विशेष रूप से प्राकृतिक, मानवीय एवं आर्थिक भूगोल का अध्ययन करने के लिये किया जाता है।

2. वर्णनात्मक विधि

भूगोल शिक्षण की यह प्राचीन विधि है। वर्णनात्मक विधि में भौगोलिक वर्णन होते हैं। देश के विभिन्न भागों तथा दूसरे देशों के निवासियों के जीवन एवं वहां के दृश्यों का वर्णन वर्णनात्मक विधि का अभिन्न अंग है। भौगोलिक वर्णन को मानचित्र, रेखाचित्र, ग्लोब, प्रोजेक्टर, श्यामपट एवं अन्य सहायक सामग्री की सहायता से आकर्षक व रूचिकर बनाया जा सकता है। भौगोलिक वर्णन पृथ्वी का वर्णन, पृथ्वी के विकास वर्णन तथा पृथ्वी पर मानव एवं कार्यकलापों का वर्णन।

3. भ्रमणात्मक विधि

निरीक्षणात्मक और भ्रमणात्मक विधि में घनिष्ठ संबंध है। भ्रमणात्मक विधि के द्वारा विद्यार्थीयों को कक्षा के बाहर ले जाकर प्रकृति के संपर्क में लाया जा सकता है और भूगोल का अध्ययन किया जाता है। यह एक उत्तम शिक्षण विधि है।

4. प्रादेशिक विधि

प्रत्येक देश का भौगोलिक वर्णन उसकी स्थिति, प्राकृतिक दशा, जलवायु, उपज, पशु, यातायात के साधन, व्यापार, मानव जीवन के आधार पर किया जाता था, प्रादेशिक विधि से सारे विश्व को विभिन्न प्राकृतिक प्रदेशों में विभक्त करना। उनका अध्ययन करना इस विधि का उद्देश्य है।

5. तुलनात्मक विधि

इस विधि में स्थानीय भूगोल को आधार मानकर अन्य प्रदेशों से तुलना की जाती है। इस विधि से दो या दो से अधिक भू-भागों की समानता, विभिन्नता, संतुलन तथा समन्वय पर जोर दिया जाता है। इस विधि से भूगोल पढ़ाते समय रेखाचित्रों का उपयोग करना बहुत आवश्यक है। बच्चे तुलनात्मक अध्ययन को स्पष्ट रूप से समझ सकते हैं।

6. आगमन विधि

इस विधि के अंतर्गत विद्यार्थीयों के सामने अनेक उदाहरण रखे जाते हैं, इन उदाहरणों के आधार पर विद्यार्थी निष्कर्ष निकालते हैं। उदाहरण - भारत के दक्षिण भाग के विभिन्न भागों के शहरों के तापमान के बारे में विद्यार्थीयों को बताने पर पुनः उत्तरी भारत के तापमान को बताया जाए तो इस आधार पर विद्यार्थी निष्कर्ष निकाल पायेंगे कि तापमान में किस प्रकार भिन्नता पायी जाती है। आगमन विधि विशिष्ट से सामान्य और संपूर्ण से अंश की और चलती है। यह विधि तर्क पर आधारित है, जो विद्यार्थीयों में तर्कशक्ति बढ़ाने में मदद करती है।

7. निगमन विधि

इस विधि में पहले नियम बताकर उस नियम की सत्यता विशिष्ट उदाहरणों को प्रस्तुत करके की जाती है। इस विधि में ज्ञान प्राप्ति की

गति काफी तेज होती है। दो या तीन विशिष्ट उदाहरणों से सामान्य नियम की सत्यता सिद्ध कर दी जाती है। इस विधि में शिक्षक पहले सामान्य नियम का स्पष्टीकरण करता है फिर विशिष्ट उदाहरणों द्वारा उस नियम की पुष्टि करता है।

8. विचार-विमर्श विधि

इस विधि के अंतर्गत छात्र व शिक्षक दोनों मिलकर विषय पर प्रश्न-परिप्रश्न करते हैं। यह विधि शिक्षण विधि की संपूर्ण प्रक्रिया नहीं कही जा सकती। यह केवल एक भाग की पूर्ति करती है। शिक्षक व्याख्यान देता है। बाद में वह उस विषय पर विद्यार्थीयों के विचार आमंत्रित करता है।

9. पाठ्यपुस्तक विधि

भारतीय स्कूलों में सर्वाधिक प्रचलित विधि पाठ्यपुस्तक विधि है। भाषा का ज्ञान तथा प्रारंभिक सामाजिक ज्ञान के विषयों के लिये यह विधि महत्वपूर्ण है। इसमें प्रायः शिक्षण पाठ्यपुस्तकों के बिंदुओं को विद्यार्थीयों को समझाने की कोशिश करते हैं।

10. योजना विधि

इस विधि में विद्यार्थी स्वयं किसी उद्देश्य को लेकर योजना बनाते हैं। शिक्षक विद्यार्थीयों को मार्गदर्शन करता है। इस विधि में सफलता शिक्षक की योग्यता एवं उसकी युक्तिपूर्णतः तथा विद्यार्थीयों के सहयोग पर निर्भर है।

11. समस्या विधि

यह भूगोल शिक्षण की महत्वपूर्ण विधि है। इस विधि में विद्यार्थीयों के सामने एक भौगोलिक समस्या रखी जाती है और विद्यार्थी उस समस्या में समस्त जानकारी प्राप्त करते हैं। इस विधि से विद्यार्थीयों के

तर्क–वितर्क शक्ति का विकास होता है। अध्यापक समस्या के बारे में निर्देशन देता है। समस्या का हल विद्यार्थी स्वयं निकालते हैं।

12. प्रयोगशाला/वैज्ञानिक विधि

विद्यार्थी शिक्षक द्वारा किये गये प्रयोगों को बहुत ध्यानपूर्वक देखते हैं और स्वयं भी अपने हाथों से प्रयोगों के परिणाम निकालते हैं। इस विधि में विद्यार्थी अपने हाथों और आँखों का प्रयोग करते हैं।

उदाहरण –

1. वायु की दिशा व भार विभिन्न यंत्रों का प्रयोग करके पता लगाना।
2. दिन व रात का होना ग्लोब व दीपक की सहायता से समझना।

1.1.8 भूगोल में आवश्यक शिक्षण सहायक सामग्री

1. **दृश्य सामग्री :–** श्यामपट, मानचित्र, ग्लोब, एटलस, चार्ट ग्राफ, डायग्राम, चित्र, रेखाचित्र, नमूना, मॉडल, स्टिरिओस्कोप, एपिस्कोप, मैजिक इत्यादि।
2. **श्रव्य सामग्री :–** टेप रिकार्डर, रेडियो।
3. **दृश्य–श्रव्य सामग्री :–** चलचित्र, टेलिविजन इत्यादि सामग्री का प्रयोग भूगोल अध्ययन में किया जाता है।

1.2 अध्ययन की आवश्यकता

भूगोल सामाजिक विज्ञान का महत्वपूर्ण विषय है। आज छात्रों को भूगोल के विषय में उतनी जानकारी नहीं होती जितनी उन्हें होनी चाहिये। आज छात्रों का सिर्फ संख्यात्मक विकास होता जा रहा है, ना कि गुणात्मक। इसका मुख्य कारण यह है कि शिक्षक अध्यापन करते समय सैद्धांतिक ज्ञान ज्यादा देते है। जो शिक्षा दी जाती है, उसका संबंध

व्यावहारिक जीवन से नहीं जोड़ा जाता। इस कारण विद्यार्थीयों को व्यावहारिक ज्ञान नहीं होता। आज विद्यार्थी केवल परीक्षार्थी होता जा रहा है। वह पाठ्यक्रम को रट्टा मारकर अधिक अंक प्राप्त करने की कोशिश करता है। भूगोल का व्यावहारिक ज्ञान होना, भूगोल कीं नींव है। यह नींव मजबूत होनी चाहिये। भौगोलिक ज्ञान में पर्यावरण ज्ञान, वातावरण संबंधी ज्ञान, कृषि, अर्थ, व्यवसाय, औद्योगिकरण इत्यादि संबंधी ज्ञान होना चाहिये। यह जानकारी हमें हमारे व्यावसायिक, शैक्षणिक क्षेत्र में महत्वपूर्ण होती है।

भूगोल विषय में अनेक महत्वपूर्ण शोध अध्ययन किये गये हैं। जिसमें भौगोलिक अवधारणाओं का अध्ययन, भूगोल की शैक्षिक सामग्री, जिसमें परंपरागत एवं नवनिर्मित तकनीकी का तुलनात्मक अध्ययन, भौगोलिक अवधारणाओं का व्यक्तित्व के संदर्भ में अध्ययन, भूगोल में वर्तमान समस्याओं का अध्ययन तथा भूगोल शिक्षकों की व्यावसायिक तैयारी इत्यादि महत्वपूर्ण अध्ययन किये गये हैं।

प्रस्तुत अध्ययन द्वारा विद्यार्थीयों को भूगोल विषय में ज्ञान की वृद्धि करने में मदद होगी। उनको जो भी जानकारी होगी उसका प्रयोग व्यवहार में भी होता है। शिक्षकों को भी यह अध्ययन महत्वपूर्ण साबित होगा। किस तरह से पाठ्यक्रम में दिये हुये मुद्दों को व्यावहारिक दृष्टिकोण से बांधकर अध्यापन करें। पर्यावरण संबंधी जानकारी दें, उनको विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिता द्वारा पर्यावरण, लोकसंख्या प्राकृतिक विपदाओं के बारे में जानने का प्रयत्न करें।

1.3 समस्या का कथन

"माध्यमिक स्तर के विद्यार्थीयों का भौगोलिक अवधारणाओं के व्यावहारिक ज्ञान का मनो-संदर्भिय चरों से संबंध का अध्ययन।"

1.4 शोध के उद्देश्य

1. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थीयों का भौगोलिक अवधारणाओं के प्रायोगिक ज्ञान का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थीयों को भौगोलिक अवधारणाओं के प्रायोगिक ज्ञान एवं उनकी बुद्धि के संबंध का अध्ययन।
3. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थीयों की शैक्षिक उपलब्धी तथा उनका भौगोलिक प्रायोगिक ज्ञान के संबंध का अध्ययन करना।
4. भौगोलिक अवधारणाओं के प्रायोगिक ज्ञान को निम्नलिखित मनो–संदर्भित चरों से संबंधित अध्ययन करना।

- स्कूलों की स्थिति के अनुसार (ग्रामीण/शहरी)।
- स्कूलों के प्रकार के आधार पर (शासकीय/निजी)।
- छात्र एवं छात्राऐं।
- सामाजिक–आर्थिक स्तर पर।

1.5 अध्ययन की परिकल्पनाऐं

1. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थीयों के भौगोलिक व्यावहारिक ज्ञान और उनकी बुद्धि में कोई सार्थक संबंध नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थीयों के भौगोलिक व्यावहारिक ज्ञान तथा उनकी भूगोल शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक संबंध नहीं है।
3. माध्यमिक स्तर के उच्च व निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थीयों के भौगोलिक व्यावहारिक ज्ञान में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
4. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थीयों के भौगोलिक अवधारणाओं के व्यावहारिक ज्ञान में बीच कोई सार्थक अंतर नहीं।

5. शासकीय एवं अशासकीय स्कूलों के विद्यार्थियों के भौगोलिक व्यावहारिक ज्ञान में कोई सार्थक अंतर नहीं।

6. माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के भौगोलिक अवधारणाओं के व्यावहारिक ज्ञान में कोई सार्थक अंतर नहीं।

1.6 तकनीकी शब्दों की परिभाषा : चरों की परिभाषा

1. **भौगोलिक व्यावहारिक ज्ञान**

भूगोल विषय की अवधारणाओं का वास्तविक जीवन से संबंध स्थापित करना ही उनका व्यावहारिक ज्ञान होता है।

2. **ग्रामीण क्षेत्र :–**

ऐसा भौगोलिक क्षेत्र जिसकी जनसंख्या 25,000 तक रहती है और जहाँ प्राथमिक व्यवसाय किये जाते है, वह ग्रामीण क्षेत्र कहलाता है।

3. **शहरी क्षेत्र :–**

ऐसा भौगोलिक क्षेत्र जिसकी जनसंख्या 50,000 के ऊपर होती है और जहाँ द्वितीय व तृतीय व्यवसाय अधिक किये जाते है, उसे शहरी क्षेत्र कहते है।

4. **बुद्धि :–**

1. बुद्धि जन्मजात, सर्वतोपरी, मानसिक कार्य कुशलता हैं। नवीन परिस्थितियों से अभियोजन करने क्षमता होती है।
2. बुद्धी, कार्यकुशलता, समायोजन करने की शक्ती जो जन्मजात होती है।

5. **सामाजिक–आर्थिक स्तर :–**

व्यक्ति का समाज में वह स्थान जिसकी पहचान उसकी शैक्षिक योग्यता, आर्थिक स्थिति उसका स्वतंत्र आदर, सम्मान, व्यक्ति की पहचान होता है, उसे सामाजिक–आर्थिक स्तर कहा गया है।

6. **भूगोल शैक्षिक उपलब्धि :–**

विद्यार्थीयों का अर्द्धवार्षिक परीक्षा का भूगोल का प्रतिफल।

1.7 अध्ययन का सीमांकन

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन महाराष्ट्र राज्य के गोंदिया जिले तक ही सीमित है।
2. गोंदिया जिले के शहरी क्षेत्र में एक शासकीय तथा एक अशासकीय विद्यालयों तक ही सीमित है।
3. गोंदिया जिले के ग्रामीण क्षेत्र में एक शासकीय तथा एक अशासकीय विद्यालय तक ही यह शोध अध्ययन सीमित है।
4. यह शोध अध्ययन केवल माध्यमिक स्तर की कक्षा 8 वीं तक ही सीमित है।